व्यास पूर्णिमा
(24 जुलाई, 2002)
पर
निवेदन

आज का पुण्य पर्व हमारे धर्म में गुरु-जनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का दिवस है, जिन्होंने हमारी अन्तःकरण रुपी भूमि में राम-मन्त्र का बीज स्थापित किया, अपने रचित ग्रन्थों द्वारा हमारा अन्धकार दूर किया तथा वर्णित साधना प्रणाली द्वारा सुखी एवं शान्त जीवन व्यतीत करने की कला को सिखाया और अपने मुखारविन्द से समय समय पर हमारा मार्ग-दर्शन किया। आज का दिन गुरु-शिष्य के बीच आध्यात्मिक सम्बन्ध स्मरण करने के लिये, नाम दीक्षा के समय उन के साथ किये वायदों को याद करने के लिये नियत है। जो मेरे गुरुजनों ने कहा है उनके कथनों की पुनरावृत्ति करके तथा उनके आदेशों, उपदेशों को जीवन में उतारने का पुनः प्रण करके, उनके श्री चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

1) रामनाम का महामांगलिक महामन्त्र मेरे हृदय में विराजमान है, यह मनो भावना दिन प्रति दिन सुदृढ़ होती जाये, साधक का विश्वास अटूट हो, कि इस नाम का वाच्य नामी भी वहीं विद्यमान है। अब मेरा हृदय परमेश्वर का सिंहासन है, मेरा तन राम-मन्दिर है जिसमें तेजोमय परम पुरुष सुशोभित है। वही मेरी पालना करता है और मेरे सब साधन राम कृपा से स्वतः सिद्ध हो रहे हैं। जब मैं श्री राम चरण शरण में सर्वभाव से समर्पित हो गया हूं, तो मुझे किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी।

2) साधक की यह धारणा ध्रुव समान हो कि जैसे तन में औषधि काम करती है, ऐसे ही मेरे विकारों, मेरी चिन्ताओं, त्रुटियों को, मेरे मलिन विचारों की व्याधियों को दूर करने का काम श्री राम नाम कर रहा हैं।

3) राम नाम रुप कल्पतरु का बीज, जो हृदय भूमि में बोया गया है, वह मेरी सफलताओं के रुप में अंकुरित, पत्रित, पुष्पित एवं फलित होता जायेगा। मेरा तो श्री राम कृपा पर भरोसा रखना ही काम हैं।

...2

4) याद रखें, भगवत्कृपा का अवतरण उसी जन पर होता है जो भक्ति भाव भरे भावों से राम नाम को जपता है, एकाग्र मन हो कर ध्यान तथा चिन्तन करता है, परा प्रीति से राम-नाम पर निर्भर है, नामोपासना को ही सर्वश्रेष्ठ एवं संपूर्ण साधना समझता है।

5) साधारण जन को श्री राम-नाम केवल शब्द तथा नाम का जप उस शब्द को बार बार रटना ही प्रतीत होता है परन्तु नामोपासक तो उसे आन्तरिक विकास का, आत्म जागृति का, आत्मोन्नति का मल, विक्षेप, आवरण के नाश का और पाप-ताप के विनाश का तुलनातीत उपाय जानें।

" राम नाम जब जगे अभंग, चेतन भाव जगे सुख संग,
ग्रन्थी अविद्या टूटे भारी, राम लीला की खिले फुलवारी।"

राम-नाम का उपासक निज स्वरुप को प्रकट कर लेता हे। जहां वह स्वयं होता है, वहीं साधक परमेश्वर को प्रकाशमान कर लिया करता है, उसकी अनन्य भक्ति के अधीन आप ही आप प्रभु अभिव्यक्त हो जाते हैं।

6) इसलिये उपासक को अपने भीतर श्री रामनाम जागत करना चाहिये, उसे ऐसा प्रतीत हो कि चलते-फिरते, उठते-बैठते, काम-काज करते हुए भीतर राम नाम स्वयंमेव जपा जा रहा है। तब समझो आत्म-सत्ता जग गई है, मंत्र सिद्ध हो गया है और उस पर राम-कृपा अवतरित हो गई है। तब उपासक काल चक्र से पार पा जाता है।

" तारक मन्त्र राम है, जिसका सुफल अपार।
इस मन्त्र के जाप से, निश्चय बने निस्तार।।"

हमने गुरुजनों को वचन दिया हुआ है कि परिस्थिति कैसी भी हो, हम कहीं भी हों, कैसे भी हों, हम राम-नाम जपते रहेंगे, ध्यान के लिये नियम पूर्वक बैठते रहेंगे, उन द्वारा रचे ग्रन्थों का अध्ययन करते रहेंगे तथा सत्संग के माध्यम से परस्पर प्रेमपूर्वक जुड़े रहेंगे। आज इसी व्रत को निभाने का पुनः दृढ़ निश्चय करते हैं और उनके आशीर्वाद मांगते हैं कि परमेश्वर कृपा हम सब पर सदा सदा बनी रहे ताकि उन द्वारा प्रदत्त मंत्र से उस सर्वोच्च पद को प्राप्त करलें जिसके लिये जीवन मिला है।

पूज्यपाद स्वामी जी के समस्त परिवार को मेरी चरण वन्दना, शुभ एवं मंगल कामनाएं।

चरण धूलि का कण
विश्वामित्र